



गांधी जी के चिंतन में वर्णित सात महा पापों की अवधारणा की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता

अर्जुन जगदीशभाई वाढिया

आदित्य बी. एड. कॉलेज जूनागढ़

सारांश

महात्मा गांधी बहुमुखी प्रतिभा से युक्त एक महान विचारक थे। उन्होंने मनुष्य के जीवन को स्पर्श करते हर एक क्षेत्र को अपने चिंतन का केंद्र बनाया। उनकी यह झलक उनके द्वारा सूचित सात सामाजिक पापों की अवधारणा में स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी यह अवधारणा राजनीति, समाज, धर्म, नैतिकता, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य, शिक्षा आदि सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को स्पर्श करती है। वर्तमान में हम देखते ही पाते हैं की राजनीति में बड़े-बड़े घोटाले, भ्रष्टाचार की बातें बढ़ रही हैं और मानवीय नैतिक सिद्धांतों का हनन हो रहा है। समाज में कितने ही ऐसे लोग हैं जो बिना श्रम किए बड़े-बड़े घोटाले करके धोखेधड़ी से धन एकत्र कर रहे हैं। कई लोग बिना विवेक सुख उपभोग के लिए अंधी दौड़ में लगे हुए हैं जिससे समाज में कई जघन्य अपराध में बढ़ोतरी हुई है। शिक्षा को कई चरित्रहीन लोगों ने अंगत स्वार्थसिद्धि के लिए साधन के रूप में प्रयोग करके समाज और राष्ट्र में एक खतरा पैदा कर दिया। कितने ही ऐसे व्यापारी हैं जो सामान्य जनता के कल्याण, स्वास्थ्य आदि के बारे में बिना सोचे केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने हेतु, कहीं गुना मुनाफा कमाने की लालच से चीज वस्तुएं, सेवाओं की गुणवत्ता कम करके समाज को आर्थिक असंतुलन की तरफ बढ़ा रहे हैं।

मानवता, नैतिकता जैसे मूल्यों को नजर अंदाज करके विज्ञान एवं तकनीकी द्वारा बनाए गए यंत्र, शस्त्रों का प्रयोग मानव जाति के एक खतरा बनकर सामने आया है। धर्म में साधना, सदाचार, आध्यात्मिकता का स्थान पाखंड, अंधश्रद्धा, अविश्वास आदि लेते हुए सामने आ रहे हैं। गांधीजी ने इन सबको सात सामाजिक पापों की सूची में सम्मिलित किया है। सिद्धांतविहीन राजनीति, श्रमविहीन धन, विवेक के बिना आनंद, चरित्र के बिना ज्ञान, नैतिकता रहित वाणिज्य, मानवता के बिना विज्ञान और त्याग के बिना धर्म को सात सामाजिक पाप कहा है

वर्तमान में जब चारों ओर कई आध्यात्मिक, नैतिक, मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा है और बुराईयां बढ़ रही हैं ऐसे में एक कल्याणकारी राष्ट्र निर्माण हेतु इन सभी बुराईयों का जल्द से जल्द निराकरण करके प्रेम, सौहार्द, न्याय आदि सभी महत्वपूर्ण सद्गुणों से युक्त राष्ट्र का निर्माण करना अनिवार्य हो जाता है। यह कल्याणकारी राष्ट्र निर्माण का कार्य गांधीजी की सात सामाजिक पापों की अवधारणा को सही अर्थों में समझकर ही सही तरीके से किया जा सकता है।



मुख्य शब्द

नैतिकता, महापाप, राजनीति, विवेक, ज्ञान, शिक्षा, मानवता, धर्म।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन कार्य में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें, पत्रिकाएं एवं वेबसाइटों को आधार बनाया है। जिन में गांधी जी कृत मेरे सपनों का भारत पुस्तक और हिंद स्वराज पुस्तक इस शोध पत्र के लेखन कार्य में विशेष रूप से सहायक हुए। गांधी जी द्वारा संपादित यंग इंडिया 22.10.1925 पत्रिका भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त बी. के. लाल द्वारा लिखित समकालीन भारतीय दर्शन एवं डॉ. लक्ष्मी सक्सेना कृत समकालीन भारतीय दर्शन पुस्तक का इस शोध पत्र को लिखने में महत्वपूर्ण योगदान हैं। इसके अलावा mkgandhi.org आदि वेबसाइटों को आधार बनाकर इन सभी स्रोतों की सहाय से प्रस्तुत शोध पत्र का लेखन कार्य किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन हेतु मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों से माहिती को एकत्र किया गया है। इस एकत्र की गई माहिती का विश्लेषणात्मक विधि से विश्लेषण किया गया है, जिससे उसके गंभीर पक्ष को आसानी से समझा जा सके। समीक्षात्मक पद्धति से उसकी समीक्षा करने के पश्चात् प्राप्त माहिती से सारगर्ही पद्धति द्वारा सार ग्रहण करके विवरणात्मक विधि से प्रस्तुत शोध पत्र में सार स्पष्ट किया गया है।

शोध पत्र का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य महात्मा गांधी के दर्शन में निहित सात सामाजिक महापापों के विचारों को जानना एवं उसकी समझ विकसित करके वर्तमान परिदृश्य में उनके प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है। जिससे राष्ट्र एवम लोग अपने जीवन में यह सात सामाजिक महापापों को दूर करके एक अच्छे नैतिक, आध्यात्मिक व सुदृढ़ समाज के निर्माण हेतु अग्रसर हो सकेंगे।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी एक विलक्षण प्रतिभा से संपन्न चिंतक थे। उन्होंने अपने चिंतन में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक आदि सभी क्षेत्रों को स्थान दिया। इन सभी क्षेत्रों से संबंधित अपने दार्शनिक विचारों का तत्कालीन स्थिति से मूल्यांकन करके प्रस्तुत किया। गांधीजी ने अपने दार्शनिक विचारों को अनेक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, संवाद आदि अनेक माध्यमों से समाज के सामने रखा। उन्होंने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, ट्रस्टीशिप, स्वदेशी, सर्वोदय, एकादश व्रत, सात सामाजिक महापाप, वर्णव्यवस्था, अहिंसात्मक क्रांति आदि



अनेक मूल्यवान सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। इन सभी में से यहां पर हम गांधीजी के द्वारा प्रस्तुत सात सामाजिक महापापों के सिद्धांतों को स्पष्ट करेंगे।

सात सामाजिक महापाप की सूची सर्वप्रथम फ्रेडरिक डोनाल्डसन द्वारा लिखी गई, जिसे महात्मा गांधी ने आज से लगभग 100 साल पहले 22 अक्टूबर, 1925 को अपने साप्ताहिक समाचार पत्र 'यंग इंडिया' में प्रकाशित किया था। उसमें उन्होंने कहा था कि पूरे विश्व को बुराईयों से बचने और शांति की स्थापना के लिए इन सात महापाप से बचना होगा। इस सात सामाजिक पाप में सिद्धांतविहीन राजनीति, श्रमविहीन धन, विवेक के बिना आनंद, चरित्र के बिना ज्ञान, नैतिकता रहित वाणिज्य, मानवता के बिना विज्ञान, त्याग के बिना धर्म शामिल हैं। यह सात महापाप या बुराईया समाज, राजनीति, धर्म, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, विज्ञान आदि सभी बिंदुओं को किसी न किसी रूप में स्पर्श करते हैं।

गांधी जी के चिंतन में वर्णित सात महा पाप:-

1. सिद्धांत विहीन राजनीति

किसी भी समाज और राष्ट्र के निर्माण में दिशा व दशा को निर्धारित करने में राजनीति का योगदान अहम है। गांधी जी राजनीति को व्यवसाय नहीं, बल्कि एक सेवा मानते थे। उनके मतानुसार राजनीति एक तपोमय जीवन है। वह नैतिक सिद्धांतों एवम मानवीय मूल्यों पर आधारित राजनीति का समर्थन करते हैं। यदि नैतिक मूल्य एवं सिद्धांतों को केंद्र में रखे बिना राजनीति होगी तो वैसी राजनीति का अंतिम लक्ष्य किसी भी तरह से सत्ता की प्राप्ति का होगा, जो अवसरवाद को जन्म देकर प्रोत्साहन देगी। जो समाज के लोगों के कल्याण एवं हित के स्थान पर अहित को बढ़ावा देगी। सत्य, नैतिकता, मानवता जैसे सिद्धांतों के बिना राजनीति समाज एवं राष्ट्र में अराजकता पैदा करके अंतः हिंसा की ओर ले जाती है। इसके अनेकों उदाहरण हमें इतिहास से प्राप्त होते हैं, जैसे कि जर्मनी के हिटलर के शासन में जो राजनीति थी वह प्रेम, मानवता, सौहार्द, नैतिकता आदि सिद्धांतों से रहित राजनीति थी।

गांधी जी राजनीति को भी नैतिकता के आधार पर प्रस्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। राजनीति को जगत तथा जीवन के आध्यात्मिक स्वरूप के अनुरूपी ही होना चाहिए। वह राजनीति में अविश्वास, धोखा, हिंसा असत्य, घृणा, अनैतिकता आदि को स्थान नहीं देते हैं। गांधी जी सत्ता के विकेंद्रीकरण की नीति को अपनाते हैं। सत्ता का केंद्रीकरण वैयक्तिक स्वतंत्रता और रचनात्मक प्रवृत्तियों के लिए घातक सिद्ध होता है।

वर्तमान परिदृश्य में हम देखते हैं कि राजनैतिक पार्टियां एवं राजनीति में जुड़े लोग सत्य, नैतिकता, लोकतांत्रिक और लोक कल्याणकारी सिद्धांतों आदि की कोई परवाह नहीं कर रहा है। आज हम पाते हैं कि अनेक राजनीतिक दलों में से सत्ता में जो पार्टी आती है वह सिद्धांत बदलकर लोगों के मूल्य, कल्याण, हित की कोई परवाह नहीं करता है। गांधी जी नैतिक कल्याणकारी सिद्धांतवादी लोकोन्मुखी राजनीति के पक्षधर थे। इस समय गांधी जी के लोकोन्मुखी राजनीति से सभी मूल्यों को आधुनिक राजनीति में लाकर समाज



एवम राष्ट्र के विकास में फिर से स्थापित किया जा सकता है और एक कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

2. श्रमविहीन धन

गांधी जी ने अपने चिंतन में साधन साध्य विषयक विस्तारपूर्वक चर्चा की हैं। गांधी साधन की पवित्रता पर जोर देते हैं। उनका मानना है कि यदि साधन पवित्र नहीं होगा। हमारे हाथों में जो है वह साधन है इसे पवित्र रखना चाहिए, जिससे फलतः साध्य भी पवित्र प्राप्त होगा। यदि कोई बिना परिश्रम के धनार्जन करता है तो इस स्थिति में साधन के पवित्रता नष्ट हो जाएगी, जिससे जो साध्य प्राप्त होगा वह भी अपनी पवित्रता को खो देगा।

समाज, राष्ट्र में जब लोग अपने कर्तव्यों का निर्वहन किए बिना धन का अर्जन करते हैं तो वह पाप के भागी बनते हैं। अध्यापक, पुलिस, प्रशासनिक अधिकारी, कृषक, नेता आदि सभी को अपने अपने कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वहन करके धन अर्जित करना चाहिए। गांधी जी ने श्रम को महत्व दिया है उन्हें स्थापित करने हेतु चरखे का प्रतीक रूप में प्रयोग किया है। समाज के प्रत्येक वर्ग, जाति के लोगों के श्रम एवं कार्य का समान महत्व है। गांधी जी श्रमयुक्त जीवन को महत्वपूर्ण मानते हैं। इसीलिए उन्होंने प्राथमिक शिक्षा में बुनियादी तालीम पर जोर देते हुए श्रम के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया है। शरीर श्रम और मानसिक श्रम को एक समान महत्व देते हैं। यह बात हमें उनके चिंतन में स्पष्ट दिखती है की जितना महत्व अध्यापक, डॉक्टर, वकील आदि के कार्य का है उतना ही महत्व मोची, नाई आदि के कार्य का भी है। हर गांव में अपनी-अपने दैनिक जरूरत की पूर्ति हेतु आत्मनिर्भरता का विकसित होना अनिवार्य है। आत्मनिर्भरता के लिए हर व्यक्ति को यथाशक्ति श्रम करके योगदान देना चाहिए। इस तरह आत्मनिर्भरता के लिए गांधी श्रम के महत्व को आवश्यक मानते हैं। गांधी अपने चिंतन में 'अन्नदायी श्रम' की बात करते हुए कहते हैं कि जीवित रहने हेतु राष्ट्र के समग्र व्यक्ति को श्रम करना अनिवार्य है। इसका निर्धारण व्यक्ति को स्वेच्छा से ही करना होगा।

आज हम राष्ट्र में देखते हैं कि लोग श्रम से भाग के मशीनीकरण या यांत्रिकीकरण की तरफ आ रहे हैं। हमारा राष्ट्र कृषि प्रधान राष्ट्र है, आधे से भी ज्यादा लोग कृषि पर आधारित है वहां हम श्रम किए बिना केवल मशीनों के भरोसे हो जाएंगे तो फिर अर्थव्यवस्था ठीक नहीं होगी। आधुनिक समाज में जहां आज प्रत्येक दिन धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार जैसे मामले बढ़ रहे हैं और अवैध तरीकों से धन संचय किया जा रहा है तब गांधी द्वारा सूचित घोर पाप को समझना अनिवार्य हो जाता है। यदि गांधी के बताएं मार्ग यानी पवित्र साधन से साध्य अर्जित किया जाए तो स्वस्थ समाज का निर्माण होकर मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।



3. विवेक के बिना आनंद

इस संसार का प्रत्येक प्राणी फिर वह मनुष्य हो या पशु सभी सुख चाहते हैं, क्योंकि सुख की कामना प्राणी को स्वाभाविक होती है। जीवन के हर कार्य या फैसले में विचार मंथन करना, गरीब दुखी से संवेदनशील होना, बिना कोई स्वहित के व्यवहार करना, किसी को उपयोगी चीज देना आदि हमारी चुनौतियां हैं, इन सभी को पार करने के लिए जीवन में विवेक का महत्व पूर्ण स्थान है। विवेक से ही जीवन में सच्चा आनंद मिलता है।

आधुनिक परिदृश्य में हम देखते हैं कि अधिकतर लोग नित्य आनन्द, समृद्धि के स्थान पर उपभोक्तावादी संस्कृति, विवेक रहित निम्न स्तरीय सुखों की ओर भाग रहे हैं। किंतु अतिशय सुख भोग मनुष्य को रोग से ग्रसित बना देता है। विवेकसम्मत रूप से ही अपने सुख को भोगना चाहिए। यह बात ईश उपनिषद् में कही गई है...

ईशावास्यमि दंसर्वयत्किंच जगत्यामजगत।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्वानम ॥

अर्थात् यह समग्र जगत में जो कुछ सजीव या निर्जीव है वह ईश्वर के नियंत्रण में है, इसलिए मनुष्य को केवल उसके लिए निर्धारित एवं आवश्यक चीजों का त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए और अन्य संपत्ति, चीजों की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

सुख के प्रति आकृष्ट होना सभी प्राणियों का स्वभाव है। सुखोपभोग अपने आप में बुरा नहीं है, किंतु विवेक रहित सुख के बदले विवेकयुक्त सुख का भोग करना उचित है। विवेक रहित सुख भोग में डूब जाने से सुख ही दुख बन जाता है। प्राचीन भारतीय चिंतन में कहा गया है कि मनुष्य अपने आप को त्याग कर भोग करना सीखें, वरना वह संपूर्ण दुनिया खा कर धर्म को पाखंड में बदल देगा।

वर्तमान परिदृश्य में कुछ लोग अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु अधिक से अधिक संसाधनों का उपभोग करके अन्य लोगों को उसके लाभों से वंचित करता है। आज का मानवी केवल अपने हित के लिए पर्यावरण को तरह-तरह से नुकसान पहुंचा रहा है, उसकी नकारात्मक इफेक्ट जंगल में रहने वाले पशु, पक्षी और वन की पैदाइशों से गुजारा करने वाले लोगों पर पड़ रही है। इनका परिणाम शुभ ना होकर अशुभ ही आता है। यदि गांधी के विवेक रहित आनंद के महापाप को समझें और दूर करें तो व्यक्ति को वास्तविक आनंद प्राप्त हो सकता है। प्रकृति से यदि विवेक के साथ पेश आकर मनुष्य उसका उपभोग कर तो जीवन वास्तविक आनंददायक होगा।

4. चरित्र के बिना ज्ञान

मनुष्य के जीवन में ज्ञान का महत्व स्थान है। ज्ञान से मनुष्य का जीवन मूल्यवान बनता है। ज्ञान के विकास से ही मनुष्य आधुनिक काल में बड़ी-बड़ी खोजें, कला, कौशल्य को प्राप्त कर सका है। गीता ने इस संसार में ज्ञान जैसा पवित्र किसी को नहीं माना -



न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।

अपने आप में ज्ञान मूल्यवान, पवित्र है। ज्ञान से युक्त जो जानी है, उसका चरित्रवान होना आवश्यक है। हम ऐसा नहीं कह सकते हैं की ज्ञान होने से वह चरित्रवान होगा ही। रामायण में भी हम पाते हैं कि रावण को वेदादि शास्त्रों का ज्ञान था, किंतु वह चरित्रवान न होने से आज उनकी गिनती पवित्रहीन जानी पुरुष के रूप में की जाती है। चरित्रहीन जानी व्यक्ति मानवता को हानि पहुंचा सकता है, ऐसे सैंकड़ों उदाहरण इतिहास में दृष्टिपात करने से हमारे समक्ष आयेगे।

जैसे - हिटलर का राजनैतिक नीति निर्माण के ज्ञान से युक्त था, किंतु उन्हें उनके नीति निर्माण आदि कार्यों के लिए नहीं बल्कि अत्याचारों के लिए याद किया जाता है। इसी तरह ओसामा बिन लादेन भी अपने बाल्यकाल से पढ़े लिखे और व्यापक तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया, किंतु वह चरित्रहीन ज्ञान था जो मानवता के विरुद्ध सिद्ध हुआ।

हिंद स्वराज में गांधी कहते हैं कि 'उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसकी बुद्धि शुद्ध, शांत और न्यायदर्शी है। जिसका मन कुदरती कानून से भरा है और जिनकी इंद्रियां उसके बस में हैं, जिसके मन की भावनाएं बिल्कुल शुद्ध है, जिसे नीच कामों से नफरत है और जो दूसरों को अपने जैसा मानता है।'

इसलिए गांधी कहते हैं कि ज्ञान किसी नैतिक आधार से प्राप्त किया जाना चाहिए। बिना नैतिकता से प्राप्त किया गया ज्ञान चरित्रहीन होता है, जो मानव जाति के लिए बहुत ही घातक, विद्वंसक सिद्ध होता है। इसलिए थोड़ा ज्ञान जितना खतरनाक होता है, उससे भी कहीं ज्यादा खतरनाक हैं चरित्र के बगैर प्राप्त किया हुआ ज्ञान। आज हमारे राष्ट्र में अनेक समस्याओं में से राष्ट्रीय चरित्र का पतन एक बड़ी समस्या बनकर हमारे सामने आती है। आज हमारे देश के बड़े-बड़े नेता, पुलिस अफसर आदि सभी को ज्ञान है फिर भी वह भ्रष्टाचार जैसी देश के विरुद्ध प्रतिक्रियाएं करते हैं तो यह चरित्रहीन ज्ञान हैं। इसलिए सभी पहलुओं का नैतिकता के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिससे समाज में से इस महापाप का निर्मूलन हो सके।

5. नैतिकता रहित वाणिज्य

गांधी जी अपने चिंतन में सभी तरह के व्यापार में नैतिकता को महत्वपूर्ण मानते हैं। आर्थिक लेनदेन नैतिक तरीके से होना चाहिए। यदि नैतिकता पर विचार किए बिना व्यापार किया जाए तो वह सिर्फ लाभ को संदर्भित करता है, जिससे समाज में आर्थिक शोषण की समस्या बड़े पैमाने पर पैदा होगी। जैसे कि भारत में अंग्रेजों के दद्वारा जो शोषणकारी ढंग से व्यापार किया जाता था उसमें सिर्फ लाभपर ही ध्यान केंद्रित करके नैतिकता को नजर अंदाज किया गया था।

हमारी आर्थिक प्रणालियों की सफलता के लिए एडम स्मिथ ने अपने ग्रंथ "मोरल सेंटीमेंट" में नैतिक आधार को आर्थिक प्रणालियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना है। आर्थिक प्रणालियों को यदि बिना किसी नैतिक



आधार के निरंतर शिक्षा के बगैर चलाया जाए तो समाज में अनैतिक अर्थव्यवस्था का निर्माण होगा, जो सारे विश्व के लिए हानिकारक है।

व्यापार से लाभ अर्जन कोई बुरी बात नहीं है, किंतु यदि हमारा व्यापार मानवीय नैतिक मूल्यों से रहित होगा तो समाज के लिए घातक है। लाभ अर्जन करने की एक सीमा होती है और उस सीमा के विरुद्ध यदि कोई व्यक्ति कई गुना लाभ अर्ज करना चाहे तो सामाजिक और आर्थिक असंतुलन पैदा होगा जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा। इससे एक वर्ग संपन्न होता जाता है और दूसरे वर्ग का महंगाई के कारण जीवन स्तर गिरने लगता है, जिससे समाज में विषमता पैदा हो जाती है।

गांधी जी के अनुसार नैतिकता रहित व्यापार घातक है। नैतिक रहित व्यापार से आज पूरे विश्व में शोषण, गरीबी अधिक बढ़ रहे हैं। आज पूरा विश्व एक बाजार बनकर हमारे सामने आ रहा है। जो विकसित राष्ट्र हैं वह विकासशील राष्ट्र शोषण कर रहे हैं, जिनके कारण आज विश्व की अर्थव्यवस्था का संतुलन भंग हो रहा है। इस महापाप से बचने से ही अर्थव्यवस्था में संतुलन आ सकेगा। इसलिए गांधी जी मानते हैं कि व्यापार और नैतिकता में सामंजस्य होना चाहिए। यदि समाज की आर्थिक संरचना नैतिक आधार से होगी तो प्रेम तथा विश्वास आने से आर्थिक शोषण का हमेशा के लिए नाश हो जायेगा।

6. मानवता के बिना विज्ञान

वर्तमान परिदृश्य में विज्ञान का विकास तेजी से हो रहा है। विज्ञान की खोजों का मानव अपने जीवन में प्रयोग करके कई समस्याओं को दूर करके एक सफल जीवन व्यतीत करता हुआ दिखाई देता है। विज्ञान एवम तकनीकी के विकास से मनुष्य ने जो भी निर्मित किया उसका प्रयोग नैतिकता को दृष्टि समक्ष रखकर ही करना चाहिए। यदि नैतिक मानवीय मूल्य को नजर अंदाज करके तकनीकी का प्रयोग किया जाए तो वह मनुष्य के सुख की वजह दुख देगा।

विज्ञान और तकनीकी के विकास में मानव अधिकार, करुणा, दया, प्रेम, क्षमा, दान, धैर्य जैसे उन्नत मूल्यों को समाविष्ट न करके एकांगी विकास हो तो वह मानवजाति को लाभ के बदले हानि पहुंचायेगा। जैसे की 1945 में अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बॉम्ब विस्फोट किया तो वह विज्ञान की ही देन थे। लेकिन उनका प्रयोग मानवीय मूल्यों को नजर अंदाज करके किया गया था, जिनके कारण दोनों जगह मानव हानि एवम मानव स्वास्थ्य को क्षति पहुंची। इस तरह यदि विज्ञान से निर्मित साधनों का संचालन मानवीय और नैतिक मूल्यहीन व्यक्ति से होगा तो वह बुराई बन के सामने आते हैं।

गांधी जी को आज जो हो रहा है वह लगभग 100 साल पूर्व ही सूझ गया था की विज्ञान एवम तकनीकी की अंधी दौड़ मानवीय मूल्यों को खत्म करके संवेदना से शून्य बना देगी। आज हमारे राष्ट्र और विश्व को देखने पर ज्ञात होता है की समाज में दूरियां बढ़ रही हैं, संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है।

गांधी जी बताते हैं कि इस घोर पाप से बचने के लिए मानव कल्याण, पर्यावरण पर दृष्टि केंद्रित करके उच्च नैतिक मूल्यों से वैज्ञानिक खोजें करनी चाहिए। आखिरकार मानवीय सुख के लिए ही तो विज्ञान प्रयोग



में लाया गया हैं। यदि विज्ञान के द्वारा ही मानवीयता खतरे में पड़ जाए तो वह निरर्थक हैं। इसलिए गांधी जी कहते हैं की विज्ञान एवम तकनीकी का सामंजस्य मानवीय नैतिक मूल्यों से होना चाहिए।

7. त्याग रहित धर्म

प्राचीन भारतीय शास्त्रों के अनुसार मनुष्य एवम पशुओं में जैविक आवश्यकताएं लगभग एक जैसी ही है। दोनों को अलग करने वाला गुण धर्म हैं जो सिर्फ मनुष्यों में ही पाया जाता हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति, चिंतन, ज्ञान परंपरा में त्याग को हमेशा से महत्वपूर्ण माना गया है, चाहे वह ज्ञान प्राप्त से संलग्न हो या धर्म से संबंधित हो। त्यागमय जीवन से आंतरिक विनम्रता आती है। बिना त्याग के धर्म में आडंबर एवं अंधविश्वासों का वास होता है।

आज स्वार्थ से परार्थ की और अग्रसर करने वाली प्रवृत्ति करना बहुत कठिन कार्यों में से एक होता जा रहा है। गांधी जी कहते हैं कि त्याग तपोमय से रहित उपासना पाप ही है। सच्चा धर्म त्यागमय जीवन साधना है। परार्थ या दूसरों के हित के लिए समग्र रूप से प्रतिबद्ध रहना गांधी उचित मानते हैं। जीवन को केवल अपने स्वार्थ हेतु जीने से व्यक्तित्व का हनन और समाज का विकास कुंठित होता है।

आधुनिक परिदृश्य में हम देखते हैं कि धर्म केवल कर्मकांड तक सीमित हो चला है। आज धर्म में त्याग तपोमय जीवन के स्थान पर आश्रम सुसज्जित सुविधा से मण्डित होने लगे हैं। आज मानव त्याग का कोई स्थान ही नहीं रहा। इस महा पाप को दूर करने हेतु गांधी जी ने त्यागमय जीवन व्यतीत करके आंतरिक शक्ति को प्रगट करना अनिवार्य बताया है। त्याग तपोमय जीवन व्यतीत करने से धर्म में निहित आडंबर एवम अंधविश्वास दूर होकर एक सच्चा धर्म स्थापित होगा।

निष्कर्ष

गांधी जी के सात पापों की अवधारणा समाज, राजनीति, वाणिज्य, विज्ञान एवं तकनीकी, धर्म, श्रम, शिक्षा आदि सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को स्पर्श करती है। इन सभी क्षेत्रों के विकास का लक्ष्य है मानव कल्याण, उन्नति, सभी मानवों के बीच प्रेम की वृद्धि। यदि इन सभी क्षेत्रों में सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को नजरअंदाज करके विकास किया जाए तो वह मानवता के कल्याण या उन्नति के स्थान पर मानव जाति के पतन की ओर अग्रसर होंगे। इसलिए विज्ञान एवम तकनीकी, राजनीति, समाज, वाणिज्य, धर्म, शिक्षा आदि का विकास सार्वभौमिक, आध्यात्मिक, नैतिक मानवीय मूल्यों को दृष्टि समक्ष रख करना चाहिए।

गांधी जी के यह सात पाप मानव जाति को यह याद दिलाते रहेंगे कि नैतिक मानवीय मूल्यों को दूर रखकर किया गया विकास मानवजाति के लिए घातक सिद्ध होगा। आधुनिक मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक समाज, राजनीति, धर्म, शिक्षा, विज्ञान, वाणिज्य आदि विभिन्न क्षेत्रों से होता हुआ गुजरता है। इसलिए मनुष्य के विकास के लिए इन सब का विकास विवेकपूर्ण तरीके से होना अनिवार्य है, क्योंकि तभी अंततः मानव जाति का कल्याण होगा। इसलिए गांधी जी ने इन सभी क्षेत्रों के नैतिक, आध्यात्मिक, सार्वभौमिक



मूल्य से विकास की बात की ओर ऐसा न करने पर समाज, राष्ट्र और विश्व को उनके विध्वंसक परिणाम झेलने पड़ेंगे। गांधी जी के सात पापों की सूची से यह फलित होता है कि जो व्यक्ति और समाज अपना सर्वांगीण विकास करना चाहते हैं उसको इन सात पापों से दूर ही रहना चाहिए। क्योंकि इन सात पाप में से एक या अधिक युक्त व्यक्ति या समाज खुद को व्यक्ति या समाज कहलाने के लायक ही नहीं है।

आधुनिक काल में हम पाते हैं कि शिक्षा, वाणिज्य, राजनीतिक, धर्म, विज्ञान, आदि को संस्थानों के द्वारा महत्तम मुनाफा कमाने हेतु कम गुणवत्ता से युक्त, कहीं गुना पैसे लेकर यह सेवाएं सामान्य जनता तक पहुंचाई जा रही है। जिसका लक्ष्य मानव जाति का सर्वांगीण विकास, सर्वार्थ विकास न होकर स्व-हित, स्व कल्याण ही है। जिससे समाज का एक वर्ग ऐसा हो गया है जो अपनी रोजिंदा जीवन की अनिवार्य सेवाओं, चीजों से भी वंचित हो रहा है।

इस तरह यह महापाप या बुराइयां समाज, राजनीति, धर्म, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, विज्ञान आदि सभी बिंदुओं को किसी न किसी रूप में स्पर्श करती है। यदि पूरे विश्व में शांति, अमन, चयन, सौहार्द, सामंजस्य स्थापित करना है तो हमें यह सात सामाजिक बुराइयों से बचना होगा। आधुनिक काल में जब मनुष्य अपने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत अनिश्चित स्थिति में जीवन व्यतीत कर के चला जाता है, नैतिक मानवीय मूल्यों का महत्व कम होता जा रहा है। तब आज की सम्पूर्ण मानव जाति को गांधी जी के द्वारा सूचित सात पापों को याद दिलाना महत्वपूर्ण हो जाता है, जो समस्त समाज, विश्व में नैतिक, आध्यात्मिक मानवीय मूल्यों के महत्व को समझाकर उन्हें वापस स्थापित कर सकता है। जो आज से लगभग 100 साल पहले गांधी जी ने सूचित किए थे जिससे उन्होंने समाज में नैतिक, मानवीय मूल्य को प्रतिष्ठित करके सामंजस्य स्थापित किया था, वैसा सामंजस्य आज भी स्थापित हो सकता है।

सन्दर्भ सूचि

1. Gandhi, M. K. Young India, 22.10.1925, P. 360
2. <https://www.mkgandhi.org>
3. <https://www.wikipedia.org>
4. लाल, बी. के. समकालीन भारतीय दर्शन, दशम् पुनर्मुद्रण, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2021, पृ. 184
5. वहीं, पृ. 187
6. सक्सेना, एल. समकालीन भारतीय दर्शन, षष्ठ संस्करण, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2016, पृ. 116
7. लाल, बी. के. समकालीन भारतीय दर्शन, दशम् पुनर्मुद्रण, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2021, पृ. 189



8. सक्सेना, एल. समकालीन भारतीय दर्शन, षष्ठ संस्करण, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2016, पृ. 115
9. गांधी, एम. के. मेरे सपनों का भारत, प्रथम संस्करण, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1960, पृ. 115
10. ईशोपनिषद् - 1
11. गीता 4/38
12. गांधी, एम. के. हिन्द स्वराज, अनुवादक अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी, संवर्धित संस्करण, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1951, पृ. 69
13. लाल, बी. के. समकालीन भारतीय दर्शन, दशम् पुनर्मुद्रण, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2021, पृ. 182
14. सक्सेना, एल. समकालीन भारतीय दर्शन, षष्ठ संस्करण, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2016, पृ. 112 113



**MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (On-line)**

International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding
this certificate to

अर्जुन जगदीशभाई वाढिया

In recognition of the publication of the paper entitled
गांधी जी के चिंतन में वर्णित सात महा पापों की अवधारणा की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता

Published in Volume 03, Issue 06, December 2025.

EDITOR IN CHIEF